मीता केतन ज़वेरी

एक व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता, रेडियो कलाकार एवं लेखक - जीवन के रंग मंच में **मीता केतन ज़वेरी** कई किरदार बखूबी निभाती चली आयी है। पर इन पहचानों के परे - उनकी सादगी, सहजता और औरों के प्रति करुणाभाव ही उनका परम आभूषण है, जो मानो उन्हें अपने गांधीवादी माता-पिता से विरासत में ही मिला हो। सेवा-उन्मुख वातावरण में पलने-बढ़ने के बाद एक व्यव्यसायी परिवार में विवाह होना उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ रहा। जिसके उनकी "जैसा है" के प्रति समर्पण भाव और साथ-ही-साथ अपने स्व-भाव व स्व-धर्म को आकर देने की आजीवन यात्रा का मानो आरम्भ हो गया हो। उन्होंने अर्थशास्त्र में मास्टर्स तक पढाई की है और अगर आपको रेडियो सुनने का शौक है, तो शायद आपको उनकी आवाज़ पहचानने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगे- सूरत आकाशवाणी में साहित्य और फ़िल्मी गीतों को पिरोते हुए अक्सर कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। वह कई सामाजिक संस्थाओ से भी गहराई से जुड़ी है जैसे जीवनभरति मंडल, सिविक हॉस्पिटल, इत्यादि। उन्होंने बच्चो के पालन पर एक किताब और कविताओं के साग्रह "स्पंदन" भी लिखा है।

कुछ ऐसा जो आपको जीवंत होने का एहसास देता है
संवेदनशील हृदय

आपके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़
उत्तर- शादी

किसी और का आपके प्रति कोई ऐसा नेक कृत्य जो आप कभी नहीं भूलेंगे?
एक अनजान आदमी। 22 सालों पुरानी एक बात।

एक बार संध्याकाल मैं और मेरी दीदी-जैसी चाची-सास एस.टी. बस से नवसारी से सूरत आ रहे थे। अभी कुछ वक्त ही गुज़रा था की हाई वे पे ट्राफिक जाम से बस रुक गई। सभी यात्रि उतर कर जाने लगे। अब हम दोनों ही थे!
हम कहां हैं यह हमें पता नहीं था। बस पांच मिनट पहले छोटी सी बस्ती हमने देखी थी, आगे कहां, कब, क्या आयेगा यह भी हमें पता नहीं था।

हम हर बार जहां से जाते हैं वह छोटा और हमारा जाना-पहचाना रास्ता यहां से ६ किलोमीटर दूर है ऐसा कंडक्टर ने बोला।

हम दोनों शादी में शामिल हो के आ रहे थें तो अच्छी सी साड़ी और रीयल डायमंड ज्वेलरी पहनी हुई थी। ज्वेलरी उतारकर पर्स में रखी और हम भी बस से उतर गए।

नये नये मोबाईल फोन का दौर शुरू हो गया था। मेरे पति केतन डांग क्षेत्र में आरोग्य केंद्र का दौरा करने और आरोग्य कार्यकरो को तालीम देने गये थे। अगर उनसे बात हो जाती तो वह हमें वापसी में ले जाते।

हम दोनों हाईवे पर पीछे छूटी हुई उस बस्ती की ओर चलने लगे। पास से गुजरती गाड़ी को फ़ोन है? ऐसा इशारा करते हुए पूछते रहे। चलते चलते एक छकड़ों रीक्षा मील गई। हम बस्ती तक पहुंचे पर वहां पीसीओ नहीं था!
हमें दुविधा में देख कर हमारे साथ ही रीक्षा से उतरे एक भाईसाहब ने कारण पूछा और तुरंत अपना मोबाइल हमें देकर बोले, "आप बात कर लो मैं अभी आया।"
वापस आए तो बाईक पर कहीं जाने की जल्दी में थे।
आते ही बोले, "मुझे एक जरूरी काम से बाहर जाना है पर आप मेरे घर में बैठ सकते हो। घर में मा और बीवी है, कोई आदमी नहीं है और मैं भी जा रहा हूं तो आप आराम से बैठ सकते हो।"

उस वक्त फोन के पैसे ज़्यादा लगते थे तो हमने मोबाइल वापस देते हुए साथ में कुछ पैसें देने चाहे।
उन्होने कहा,"बहन से मैं पैसा नहीं ले सकता। अपने घर वालों से भेट हो उस वक्त मुझे इसी नंबर पर बता देना, जब तक आपका फोन नहीं आएगा तब तक मेरे मन में आप की चिंता रहेगी।"

हमने फ़ोन कर के सही सलामत पहुंचे हैं यह बता कर शुक्रिया अदा किया, उसके बाद कभी कोई संपर्क नहीं पर उस शाम की हमारे मन की घबराहट में राहत देने वाले ऐसे भाई को कोई कैसे भूले!-मिता

कोई आपकी ऐसी इच्छा जो आपके "बकेट लिस्ट" में हैं
प्रकृति के संगीत को अविरत महसूस करुं।

जगत के लिए एक वाक्य में सन्देश
सृष्टि बहोत ही सुन्दर है, उसकी प्यार भरी रीधम को ओर सूरीला बनाने में सहयोग करें।